वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

जून - 2020

- घमण्डी जन के लिए नेचर में भलाई के सब दरवाज़े बन्द हैं
- भगवान देवात्मा ने फरमाया है।
- विशुद्ध परोपकारी और स्वार्थ परायण मनुष्यों के जीवन में अंतर
- देव समाज के इतिहास का एक और पन्ना लोप हो गया
- सोचें हम कहां जा रहे हैं?
- कहां गए वह लोग?
- तम्बाकू सम्बन्धी भ्रम और भ्रान्तियां
- पुरोहिताई (प्रीसटहुड) क्या है?

एक अद्वितीय पिता के सुनहरे उपदेश

(अपने तरूण पुत्र को) 8 जुलाई 1910

तुमने अपने लिए कुछ उपदेश चाहे हैं। ऐसे उपदेश नीचे दर्ज किए जाते हैं। यह उपदेश, यदि तुम उन्हें ग्रहण कर सको, तुम्हारे लिए बहुत कल्याणकारी प्रमाणित होंगे।

1. चोर, ठग, जुवारी, व्याभिचारी और नशई जनों से कभी मित्रता पैदा न करो, और कभी उनकी संगत न करो, और सब प्रकार के कुसंग से अपनी रक्षा करो।
2. तुम खुद किसी नशे - शराब, अफीम, भंग, गांजा, चंडू, कोकेन, तम्बाकू आदि का कभी सेवन न करो।
3. व्यभिचार और अप्राकृतिक पाप कर्मों से सदा विरत रहो।
4. उचित रोज़गार करो, और उसके सम्बन्ध में अपने प्रत्येक काम को दयानतकारी और परिश्रम से पूरा करो।
5. अपने ज़िम्मे के हर एक काम को नियत समय से पहले वा नियत समय तक और उत्तम रूप से पूरा करने की चेष्टा करो।
6. अपनी अच्छी और उचित प्रतिज्ञाओं को कभी भंग न करो।
7. अपने पिता, माता, भाई, बहिन आदि सब उपकारियों के उपकारों को बार बार स्मरण करके उनके प्रति अपने हृदय में कृतज्ञ भाव के उत्पन्न करने की कोशिश करो।
8. अपनी सामर्थ्य के अनुसार जिस किसी की कोई उचित सहाय वा सेवा कर सकते हो, उसके करने का अभ्यास करो।
9. धर्म के नाम से किसी मिथ्या मत को स्वीकार न करो।
10. अपने सच्चे हितैषियों के संबंध में उल्टी गति ग्रहण करके उनसे दूर न हो, किंतु अच्छी गति के ग्रहण करने के योग्य बन कर उनकी प्रसन्नता ओर उनका आशीर्वाद लाभ करना अपना श्रेष्ट कर्तव्य समझो।

यदि इन उपदेशों को ग्रहण कर सकोगे, तो उनके द्वारा क्या इस लोक और क्या परलोक दोनों में तुम्हारा सब प्रकार से कल्याण होगा।

(अद्वितीय त्याग खण्ड 6)

धर्म जीवन

खण्ड 31 अंक 6
जून – 2020
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

घमण्डी जन के लिए नेचर में भलाई के सब दरवाज़े बन्द हैं

जब कोई मनुष्य अपने आप का इतना अनुरागी या प्रेमक हो जाता है कि वह अपनी विविध बातों को झूठ-मूठ बढ़िया जानता और समझता है, तब उसका अपने सम्बन्ध में इस प्रकार का मिथ्या विश्वास या पक्षपात घमण्ड कहलाता है।

वह अपने में वास्तविक गुण या योग्यता न रख कर भी उसका झूठ-मूठ अपने में होना प्रकट करता है।

वह अपनी किसी योग्यता व कुशलता पर सत्य की सीमा से बढ़कर भरोसा करता है।

वह अपनी किसी अयोग्यता को अयोग्यता अनुभव नहीं करता, किन्तु इस के उल्ट फूलता और अकड़ता है। किसी की अपेक्षा आप हीन होकर भी उसे अपनी अपेक्षा तुच्छ अनुभव करता है।

वह अपनी किसी बुराई के देखने के अयोग्य होकर भी किसी और में झूठ-मूठ भी कोई बुराई देखने व वर्णन करने व सुनने के लिए तैयार रहता है।

वह किसी की आप कोई झूठी निन्दा करके व किसी और से सुनकर प्रसन्न होता है।

घमण्डी जन अपने विषय में किसी सत्य को मिथ्या और किसी मिथ्या को सत्य देखता है।

वह दूसरों के श्रेष्ठ और उच्च गुणों के सच्चे सौन्दर्य और उनकी सच्ची महिमा को देखने के योग्य नहीं रहता।

वह नाना विषयों में मिथ्या-दृष्टा और मिथ्या-विश्वासी होकर भी अपने आप को सदा ठीक ठाक विश्वास करता है और अपने से भिन्न मत व विश्वास रखने वाले को भ्रान्त, भ्रष्ट और गुमराह समझता है।

वह बलशाली होकर अपने जैसा विश्वास या मत न रखने वालों को नीच घृणा करता है, उन पर अत्याचार करता है और उन्हें नाना प्रकार से सताता है, यहां तक कि उनकी हत्या तक कर देता है।

वह अपनी अपेक्षा किसी विषय में किसी और जन से श्रेष्ठ वा बढ़िया समझ कर कष्ट बोध करता है।

वह औरों की झूठी अप्रशंसा करके खुश होता है।

वह जिन को नीच घृणा करता है, उनसे फट जाता या दूर हो जाता है। उनसे परे-परे रहता है। उनका मुंह न देखना, उनसे कोई बातचीत न करना उन पर कोई मिथ्या कलंक लगाना, उनकी कोई उचित सहायता न करना बल्कि उनकी हानि करना व किसी और से कराना भी घमण्डी जन के लिए अनिवार्य हो जाता है।

भगवान् देवात्मा फरमाते है कि घमण्ड का

प्रबल अधिकार रखने वाले जन के लिए नेचर ने भलाई के सब रास्ते बन्द कर दिए हैं। उसने ऐसे जन की जिन्दगी पर यह मोहर लगा दी है कि वह बेहतर न बन सके।

"यूं तो सब नीच अनुराग और नीच घृणाएं आत्मा के लिए हानिकारक हैं परन्तु जो नीच अनुराग आत्मिक कोढ़ का काम करता है व अहं (घमण्ड) का महा हानिकारक रोग है। ऐसा अभागा जन औरों के सच्चे या झूठे अवगुणों को औरों के पास प्रकाश करके विष खाने और औरों के भीतर भी विष संचार करने का काम करता रहता है।"

यह बात अच्छी तरह से समझ लेनी चाहिए कि किसी की बुराई को भी तब तक किसी और पर प्रगट न करो, जब तक तुम्हारा यह उद्देश्य न हो कि मैंने इनकी इस बुराई को दूर करना है। वरना आदमी में ख़्वामख़्वाह घमण्ड पैदा होता है कि वाह! मैं कैसा अच्छा हूं और यह कैसा खराब है।

तुम सोचो कि जैसे किसी गल्ती को औरों के पास बताने को दिल चाहता है, वैसे ही क्या अपनी किसी गल्ती को भी किसी और के पास बताने को दिल करता है?

यदि कोई सच्ची गल्ती भी बिना उचित कारण के किसी और को बताई जाए, तो उस में भी न समाज का, न गुरु का, न उस जन का भला है। ऐसा जन सेवक रहने के भी योग्य नहीं परन्तु कर्मचारी तो वह किसी प्रकार से भी नहीं रह सकता। याद रखो कि दीन हो कर ही भलाई का रास्ता खुलता है। घमण्डी के लिए भलाई के सब रास्ते बन्द हैं।

''घमण्डी जन कभी भी अपने विषय में यह विचार नहीं कर सकता कि मुझ में भी कोई आत्मिक रोग है, वह यह समझता है कि मैं जो कुछ जानता हूँ, वह ठीक जानता हूँ। वह सत्य को लात मारता है। वह हर समय झूठ में रहना चाहता है। उसकी बुराई पर यदि कोई चोट लगाई जाए तो वह सांप की मानिन्द फन निकालता है। घमण्डी जन के लिए इस दुनिया व अगली दुनिया में पतन ही पतन है।"

भगवान् देवात्मा में सब प्रकार के सत्य और शुभ के लिए पूर्ण अनुराग और सब प्रकार के मिथ्या और अशुभ के लिए पूर्ण घृणा भाव वर्तमान हैं, इस लिए नेचर के अटल नियम के अनुसार उनके आत्मा में ईर्ष्या, द्वेष, हिंसा और घमण्ड भाव के बीज भी जन्मकाल से ही नहीं आए।

श्रद्धा और सन्मान के भाव घमण्ड भाव के विरोधी भाव हैं। भगवान् देवात्मा में श्रद्धा और सम्मान के भाव पूर्ण रूप से वर्तमान थे, जिसका पता नीचे लिखी कुछ घटनाओं से लगता है -

भगवान देवात्मा के बागीचे में गयाद्दीन नाम का एक माली काम करता था। वह अपने काम को चाहे कोई देखे या न देखे, बहुत लगाव और निष्ठा से पूरा करता था। भगवान् देवात्मा उसकी इस कर्तव्य-परायणता से बहुत प्रसन्न थे। उन्होंने एक अवसर पर उसको फूलों का हार पहनाया। उसके माथे पर तिलक किया और उसको कुछ उपहार दिया और मुक्त-कण्ठ से उसके काम की सराहना की।

सन् 1928 के महोत्सव पर भगवान् देवात्मा ने अपनी महा-सभा के आरम्भ में नेचर को सम्बोधन करके फरमाया था कि इस पृथ्वी की तुलना में एक राई के दाने की तो फिर भी कुछ हकीकत है, परन्तु इस अति महान्, अति विशाल नेचर की तुलना में मेरी अपनी हस्ती की क्या हक़ीकत है? उन्होंने बताया कि उनकी अपनी हस्ती की उत्पत्ति भी इस नेचर से है और उसकी रक्षा और सच्ची सफलता भी एकमात्र इसी नेचर के सत्य नियमों पर निर्भर है।

कई अवसरों पर ऐसा हुआ है कि अपनी श्रद्धा के योग्य माता जी के दर्शन करते ही भगवान् के भीतर का सम्मान का भाव इस जोर से उत्तेजित हो गया है कि

वह फौरन ही मधुर दीनता और श्रद्धा से भर कर जमीन पर साष्टांग प्रणाम करने और अपनी माता के चरण छूने के लिए मजबूर हो गए है। उन्होंने इस बात की कतई परवाह नहीं कि ज़मीन पर चटाई या दरी बिछी हुई नहीं हैं। उस समय उनके सामने केवल प्यारी माता की उपकारी, हितकारी तस्वीर होती थी और इसके सिवाए कुछ नहीं।

एक बार पूजनीय भगवान् को स्वप्न में एक श्रद्धेय महात्मा के दर्शन हुए कि जिनके लिए उनमें गहरा सम्मान वर्तमान था। भगवान् के भीतर फौरन यह भाव पैदा हुआ कि वह इन महात्मा के चरणों को छूकर प्रणाम करें, परन्तु इसके साथ ही फौरन उनके दिल में यह ख्याल गुजर गया कि मैंने अपने हाथ नहीं धोए हैं। अब यद्यपि भगवान् सफ़ाई की मूर्ति हैं, तो भी सम्मान के निहायत पवित्र और उच्च भाव ने उनके दिल और दिमाग पर इस कदर प्रबल अधिकार प्राप्त किया हुआ था कि उन्होंने हाथ धोए और इस महात्मा के चरणों को छुआ।

अपने किसी बड़े-से-बड़े विरोधी जन के गुण को सामने लाकर भगवान् उसके उस गुण की सराहना करने के बिना नहीं रह सकते थे। आर्य समाज के लाला मुंशी राम (स्वामी श्रद्धा नन्द) ने भगवान् की पवित्र ज़ात पर कई झूठे और बे-बुनियाद अभियोग लगाए थे, परन्तु भगवान् ने अपने अनुयाइयों के सम्मुख कितनी ही बार उनके इस गुण की प्रशंसा की है कि वह अपने गुरुकुल के लिए चन्दा इकट्ठा करने का काम बहुत कुरबानी और जोश से करते रहे हैं। इसी प्रकार लाला हंसराज भूतपूर्ण प्रधानाचार्य डी. ए. वी. कालिज लाहौर की भगवान् से उनकी विद्या विषयक सेवाओं की बहुत सराहना की थी।

भगवान् उन तमाम हितकर सुझावों को चाहे उनके तुच्छ सेवकों की ओर से भी क्यों न दिए जाएं, पूरे ध्यान से सुनते थे। उन्होंने श्रीमान् देवत्व सिंह जी से उनके आत्माओं में काम करने के तजरुबों को बहुत ध्यान से सुना। एक छोटे से बच्चे की बात को भी भगवान झुक कर और अपने कान को उसके मुँह के पास ले जाकर बड़े ध्यान से सुनते थे।

भगवान के एक कर्मचारी बीमार थे। हमदर्दी से भर कर भगवान् उनके कमरे में गए। उन्होंने देखा कि उनके पास पूरा बिस्तर नहीं है और उनके कमरे में सामान भी अस्त-व्यसस्त अवस्था में पड़ा है। भगवान् ने स्वयं उस कर्मचारी के बिस्तर को ठीक तरह से बिछाया। अस्त-व्यस्त सामान को ठीक अवस्था में रखवा। बीमार कर्मचारी की चारपाई को एक ऐसे स्थान पर रखवा कि जिस से वह खिड़की में से कमरे से बाहर का दृश्य देख सके और अपने दिल को बहला सके।

देव समाज के एक माननीय कर्मचारी की एक रिश्तेदार स्त्री को पर्वताश्रम सोलन में रहने के लिए एक कमरे की आवश्यकता पड़ी। वह कमरा उन दिनों रहने के लिए इस्तेमाल नहीं होता था, बल्कि इसमें कुछ सामान रखवा जाता था। भगवान् ने अपने कीमती समय के कई घण्टे अपने आदमियों से इस कमरे की सफ़ाई करवाने में लगवाए। उन्होंने स्वयं भी कमरे की सफ़ाई में भाग लिया।

श्रीमान मंगलदेव जी बहुत कुरबानी से भगवान् के मिशन की सेवा करते थे। उनकी सेवा से प्रभावित होकर भगवान् ने उनके पांव धोए और अपने हाथ से उनको खाना बना कर खिलााया।

श्रद्धेय डाक्टर कुमारी प्रेमदेवी जी देव धर्म मिशन की अनुरागी सेवाकारी थीं, नौजवानी की आयु में ही उनका देहान्त हो गया। पूजनीय भगवान् नंगे पांव शमशान भूमि में गए और श्रद्धेया जी की अस्थियों और राख की ढेरी के पास खड़े होकर फ़रमाया कि यदि तुम किसी राजा की महारानी होती, तो भी मैं तुम्हें इस प्रकार सम्मान देने न आता। परन्तु तुमने जो देव धर्म मिशन की सेवा की है, उसके लिए मैं तुम्हें हृदय-गत भावों से सम्मान देने आया हूँ।

(बलदेव सिंह)

भगवान देवात्मा ने फरमाया है।

घमंड के वश में होकर इन्सान अपनी झूठमूठ बहुत अधिक कीमत लगाता है और अपने आपको बहुत बड़ा समझता है। जो काम वह नहीं कर सकता, उसके करने का भी दम भरता है। एक जन जो पहाड़ की चोटी पर खड़ा हुआ था, उससे हमने कहा कि यहां से भाग कर नीचे उतरोगे, तो गिरने का अंदेशा है। परन्तु उस घमंडी जन ने कहा कि नहीं, मैं भागकर उतरूंगा और नीचे नहीं गिरूंगा। चुनाचि वह उतरने लगा और धड़ाम से नीच गिर पड़ा। एक कछुए और खरगोश ने एक ही स्थान मे पहुंचना था। खरगोश तो यह सोच कर कि अभी आराम करें, एक छलांग मारेंगे और झट वहां पर पहुंच जाएंगे, वहीं पर ही सोया रह गया और कछुआ बेचारा यह समझता था कि मैं उससे तेज तो नहीं चल सकता, वह धीरे धीरे चलता रहा और मंज़िल मकसूद तक पहुंच गया। इस प्रकार से घमंडी जन की यह आवाज़ होती है कि यह काम अमुक दिन तक हो जाएगा, जब कि इसमें कितने ही विघ्न उत्पन्न हो सकते हैं। इसलिए भले जन उन विघ्नों का भी ख्याल रख लेते हैं। और यदि वही काम आठ दिन में समाप्त होने की बजाए चार दिन में समाप्त हो जाएं, तो कौन सी तबाही आती है? उन चार दिनों में तुम्हें भलाई करने का और मौका मिल जाएगा। याद रखो कि दीन होकर भलाई का रास्ता खुलता है, घमंडी के लिए भलाई के सब रास्ते बंद हैं।

अहं अनुरागी देवात्मा से फट जाता है, इसलिए उस तक देव ज्योति के पहुंचने का सिलसिला भी बन्द हो जाता है। और फिर यदि तुम्हें देवात्मा की ज्योति मिल भी जावे, परन्तु तुम स्वार्थी रहकर उसे औरों तक न पहुंचाओ तो भी तुम तक उस रोशनी का पहुंचना बन्द हो जाएगा। इसलिए आवश्यकता है कि तुम अहं अनुरागी न बनो, परोपकारी बनो। तुम खुद मेरी रोशनी को पाओ और उसे औरों तक पहुंचाओ। तुम्हारी यह कामना हो कि मैं देवात्मा की रोशनी पाऊंगा और विशुद्ध भावों से उसे औरों तक पहुंचाऊँगा। प्रतिदिन साधन करके इस रोशनी को प्राप्त करो और फिर उसे औरों तक पहुँचाओ। उसे अपने तक ही बन्द न रखो, वरना वह तुम से छिन जाएगी और तुम फिर पहले की न्याईं अंधकारग्रस्त हो जाओगे। तुम्हें चाहिए कि मेरी इस शुभ इच्छा का साथ दो, मेरी ज्योति को खुद पाओ और उसे औरों तक पहुंचाओ।

अहं अनुराग से इन्सान मरता है। वह अपने उलट कुछ नहीं देख सकता। वह सचाई नहीं चाहता। देवत्वसिंह जी के जीवन में तब सच्ची बेहतरी का क्रम आरम्भ हुआ, जब उन्होंने अपने भीतर के अहं अनुराग को अपने लिए महा हानिकारक बोध किया और वह उससे मुक्ति पाने के साधनों में लग गए।

अहं अनुरागी जन झूठ को सच समझता है। वह कहता है कि मैं सब कुछ जानता हूं। अहं अनुराग देवात्मा से फाड़ देता है, घृणा पैदा कर देता है। इसका फल यह होता है कि ऐसा जन अन्धकार से घिर जाता है, धर्म साध न करना नहीं चाहता, किसी की सच्ची खूबी नहीं देख सकता और न ही देखना चाहता है। वह सचाई देखने के आयोग्य हो जाता है।

अहं अनुरागी जन कभी भी अपने विषय में यह विचार नहीं कर सकता कि मुझ में कौन कौन से आत्मिक रोग हैं? वह यह समझता है कि मैं जो कुछ जानता हूं, वह ठीक जानता हूं। वह सत्य को लात मारता है। वह हर समय झूठ में रहना चाहता है। उसकी बुराई पर यदि कोई चोट लगाई जावे, तो वह सांप की मानिन्द फन निकालता है। अहं अनुरागी के लिए इस दुनिया और अगली दुनिया में केवल पतन ही पतन है (दवेत्वसिंह जी जब अहं अनुराग को आत्म घातक रूप में देखकर उससे मोक्ष पाने के संग्राम में लग गये थे, तभी उनकी बेहतरी का ठीक क्रम चल सका था) हमारे संबंध में जिनके भीतर कुछ भी घृणा पैदा हो जाती है, अथवा जो लोग हम से फट जाते हैं, वह हमारे सम्बन्ध में कोई सच्चा साधन नहीं कर सकते। हां यदि पहले कभी वह ऐसा साधन करते भी हों, तो ऐसी अवस्था में आने पर उनका वह साधन बन्द हो जाता है।

ऐसे लोगों को दूसरों की कोई खूबी देखना पसन्द ही नहीं होता, इसलिए उनके हित के सब दरवाजे बन्द रहते हैं।

नेचर का यह नियम है कि जिस चीज़ को तुम प्रेम करोगे, उस के तरफदार बन जाओगे। मनुष्यों में जो बड़ा नीच अनुराग फैला हुआ है, वह अहं अनुराग है। इस अहं अनुराग या 'मैं' के खिलाफ यदि किसी को कुछ कहो, तो वह उलट पुलट हो जाता है। वह दूसरे के सामने घटिया नज़र आना नहीं चाहता। उसकी तारीफ करो, तो वह खुश मालूम होता है, उस का चेहरा फूल की न्याईं खिल जाता है, उसके खिलाफ कहा, तो चेहरा फक् ही जाता है, रंग फीका पड़ जाता है। हमने जो उसको 'मैं' पर सदमा लगाया, इस सदमे को खाकर वह हमें घूरता है। देवात्मा के भीतर 'मैं' का प्रेम कुछ भी नहीं है और न ही उस में किसी आदमी के लिए कोई प्रेम है। फिर तुम यह कह सकते हो कि आप हम नीच आदमियों से दुःख पाते हैं, आप हमें छोड़कर भाग क्यों नहीं जाते? इसलिए कि नेचर हमें भागने नहीं देती। हम रात भी तड़पते रहे हैं, फिर भी यहां पर आकर बैठ गए हैं। तुम्हारा भला करने में दुःख मिलता है, रोग मिलते हैं, परन्तु फिर भी नेचर यही कहती है कि तुम बेशक रोगों को अपने सिर पर लो, परन्तु तुम्हें भला करना ही होगा। मनुष्य न सच्चाई चाहता है, न भलाई। नेचर की यह इजाज़त नहीं कि वह गरम मसाले खाए परन्तु वह खाता है। नेचर कहती है कि चाय न पीयो, वह हानिकारक है, परन्तु वह कहता है कि मुझे तो बड़ा रस आता है। नेचर कहती है कि नमक न खाओ, वह हानिकारक है। पशु पक्षी बिना नमक के जीते हैं। देवात्मा इतने बूढ़े होकर भी बिना नमक के जीते हैं। परन्तु वह कहता है कि मैं नमक नहीं छोड़ सकता। हर एक नीच राग का पक्षपाती बनकर वह इसी प्रकार का जवाब देने के लिए लाचार है।

एक स्त्री की ओर संकेत करके भगवान देवात्मा ने फरमाया-दुर्भाग्य से स्त्रियों में ईर्षा, द्वेष और नीच घृणा की शक्तियां बहुत प्रबल रूप में आई हैं। यह प्रकृति शेर और भेड़िए की सी महा नीच प्रकृति है, जो औरों को फाड़ खाना चाहती है। नीच घृणा एक बहुत बड़ा हानिकारक आत्मिक रोग है। जैसे विष शरीर के नाना अंगों को नाश करने का काम करता है, उसी प्रकार यह नीच घृणा का भाव आत्मा के अंगों का नाश करता है। आत्मा में देव प्रभावों के पहुंचने के सब रास्ते बंद कर देता है। इसलिए मनुष्य के लिए किसी भी अस्तित्व को घृणा करना उचित नहीं है। यदि कोई जन किसी को घृणा करता हो या उसके साथ कोई अनुचित सलूक करता हो, तो उसके लिए वह जिम्मेवार है, तुम उसे घृणा करके अपने आत्मा का नाश काहे को करो। जैसे एक एक मां अपने बच्चे से दुःख पाकर भी उसे परे नहीं फेंकती, वरना बच्चे की पालना कैसे हो, वैसे ही तुम में भी औरों के संबंध में यही भाव क्यों न आना चाहिए? स्त्रियों में स्पार्थपरता बहुत अधिक बढ़ी हुई है, इसलिए वह अपने ही बच्चे से संबंध बोध करती हैं। वरना सच्ची हमदर्दी, स्नेह वा प्यार आदि के उच्च भाव स्त्री जाति में अधिक मात्रा में होने चाहिएं। किसी गिरे हुए को उठाना, एक एक पतित जन को बेहतर करना, दुखिया की सहायता करना, आत्मा की उच्च अवस्था का प्रमाण है। एक दूसरे को घृणा करने में कौन सी खूबी की बात है? ऐसा करके दोनों का आत्मिक पतन होता है। इसलिए दो स्त्रियों का कहीं मिलकर रहना बहुत कठिन हो रहा है। वह एक दूसरे की ज़रा ज़रा सी बात को भी बरदाश्त नहीं कर सकतीं। उनमें झट लड़ाई शुरू हो जाती है। यद्यपि मनुष्य को पैदा हुए लाखों वर्ष हो चुके हैं, तथापि मनुष्य के भीतर बहुत कुछ भेड़िए और शेर जैस फाड़ खाने वाली हिंसक प्रकृति भरी पड़ी है, जो कटने में नहीं आती। यह आपस के झगड़े फिसाद होते इसलिए हैं कि मनुष्य के भीतर राक्षसी भाव भरे पड़े हैं। यदि यह नष्ट हो जावें, तो कोई लड़ाई झगड़ा न हो। इसलिए तुम्हें धैर्य और हिम्मत के साथ लगातार निज के साधनों के द्वारा देव प्रभावों के पाने और भीतर के राक्षसों को काटने वा नष्ट करने की आवश्यकता है, ताकि तुम्हारे आत्मिक कल्याण का मार्ग अधिक से अधिक खुल सके।

नीच घृणा का भाव महा विनाशकारी है और मनुष्य के दिल को जला देने वाला है। दिल का जलना, सड़ना और कुढ़ना क्या है? यही कि दिल में नीच घृणा

वर्तमान है जो औरों से फाड़ने का काम करती है। आज कल हिन्दुओं और मुसलमानों में जो फिसाद हो रहा है, उसकी तह में और क्या बात है? यही नीच घृणा शक्ति कि जो कुश्तो खून करा रही है, आपस में लड़ाई झगड़ा और मार पिटाई करा रही है। क्या झांगी राम के जीवन में यह नीच घृणा का ही प्रकाश नहीं कि किसी बात पर नाराज़ होकर उसने अपने दामाद से बरसों तक बात भी नहीं की? उसने उनका क्या बिगाड़ा था? हमारे लिए उसका दिल इतना घृणा भाव से भरा हुआ है कि उसे हमारी शक्ल तक देखना और हमें मामूली सम्मान देना भी गवारा नहीं। क्या कोई नेक जन यह गवारा कर सकता है कि उसके माता पिता यदि उसके पास से गुज़रें, तो वह उनकी तरफ से पीठ मोड़ ले और मामूली सम्मान का भी प्रकाश न करे। हमारे ख्याल में वह और उसके माता पिता कभी यह गवारा नहीं करेंगे, फिर गुरु के संबंध में यह नीच घृणा कैसी विनाशकारी है! यह आत्मा का कुछ भी बाकी नहीं रहने देती। किसी की किसी खूबी को देखने नहीं देती और न ही उसका औरों के पास प्रकाश करने देती है। खूबी को देखने के लिए रोशनी चाहिए और उसका प्रकाश करने के लिए भाव चाहिए, यह दोनों चीज़ें ही नीच घृणा का भाव पैदा होने नहीं देती।

-देव वाणी के नोट में से

विशुद्ध परोपकारी और स्वार्थ परायण मनुष्यों के जीवन में अंतर

जैसे कि विष या मिट्टी खाने से मनुष्य का शारीरिक स्वास्थ्य बिगड़ता है और दूध फल आदि के ठीक सेवन से वह बेहतर बनता है, वैसे ही स्वार्थपर्ता का जीवन व्यतीत करने से मनुष्य का आत्मिक जीवन बिगड़ता और नष्ट होता है और विविध संबंधों में कई प्रकार से निष्काम सेवाकारी बनने से उसका जीवन उसकी अपनी योग्यता के अनुसार बेहतर बनता और उन्नत होता है। इस विषय में भगवान देवआत्मा के दो वचन नीचे दिए जाते है -

नेचर का यहअटल नियम है कि जो मनुष्य स्वार्थी या स्वार्थ परायण होते हैं, वह नेचर के विकास के अटल नियम के अनुसार दिनों-दिन आत्मिक पतन की ओर जाते हैं।

तुम इस तत्व को अच्छी तरह जानों और पहचानों कि तुम्हारे आत्मा की रक्षा और उन्नति औरों की निष्काम भलाई पर निर्भर करती है।

उपरोक्त दोनों वचन बहुत अच्छी तरह इस सच्चाई को प्रगट करते हैं कि मनुष्य के लिए स्वार्थपर्ता का जीवन पतनकारी और विनाशकारी है और निष्काम भलाई का जीवन विकासकारी और कल्याणकारी है।

क्या भौतिक जगत, क्या उद्दभिद जगत, क्या पशु जगत और क्या मनुष्य जगत के घटिया और बढ़िया दर्जे के अस्तित्व अपने-अपने रूप और अपने-अपने फलों से उपरोक्त सच्चाईयों को डंके की चोट से प्रगट नहीं कर रहे हैं?

नेचर में स्वार्थी और विशुद्ध परोपकारी जनों के जीवन में जो अलग-अलग प्रकार के कई लक्षण या फल पैदा होते हैं, उनमें से कुछ लक्षण या फल नीचे दिए जाते हैं।

(1) प्रत्येक मनुष्य स्वभावत: सुख का प्रबल आकांक्षी है और दुख से घबराता है। परन्तु स्वार्थ परायण मनुष्य के लिए बहुत बड़ी कठिनाई यह है कि वह अपने किसी सेवा के बदले जो सुख चाहता है, उसके बदले वह धन, मान, इज्जत व पद आदि की आकांक्षा करता है, वह सब कुछ औरों के हाथ में है। उसकी खुशी का सामान अधिकतर उसके अपने अस्तित्व से बाहर के सामानों और बाहर के अस्तित्वों में हैं और उसका वह सुख उनके चले जाने, पत्नी या संतान के मर जाने, किसी पद के छिन जाने,

किसी की ओर से अपमानित होने से नष्ट हो जाता है। परन्तु इसके विरूद्ध जिस मनुष्य को दूसरों की निष्काम सेवा या भलाई में सुख मिलता है, उसका सुख उसके बाहर के जनों के हाथ में नहीं है, बल्कि उसके अपने आत्मा के भीतर ही है। श्रद्धा, कृतज्ञता, दुख निवारण या अभाव निवारणआदि सात्विक भावों से परिचालित होकर जो जन किसी की भलाई करता है, उसके बदले में वह सुख लाभ करने के लिए किसी और अस्तित्व का मोहताज नहीं है, बल्कि उसके सुख का सामान उसके अन्दर ही है। इसी प्रकार स्वार्थ परायण मनुष्य के दुख का सामान उसके अपने अन्दर है और निष्काम सेवाकारी मनुष्य के दुख का सामान अधिकतर और नीच अत्माओं के व्यवहार में है। जो स्वार्थ परायण मनुष्य ईर्षा या घमंड या मोह या क्रोध के कारण दुख पा रहा है, उसे कोई दूसरा मनुष्य चाहे कुछ भी तकलीफ न दे तो भी अपनी ऐसी बुरी प्रकृति के कारण अपने आप में स्वयं दुखी रहेगा और उस दुख से अपनी जीवनीशक्ति का नाश करता रहेगा। वह अकेला होकर भी उच्च शांति लाभ नहीं कर सकेगा और इसके विरुद्ध जो जन निष्काम सेवाकारी है, वह स्थूल शरीर छोड़ने पर नीच आत्माओं की पहुंच से ऊपर चला जाएगा और इसलिए उनके बुरे बर्तावों के दुख से सुरक्षित हो जाएगा। ऐसी अवस्था में वह अपने उच्च भावों के कारण बहुत उच्च शांति की अवस्था में रहेगा। स्वार्थ परायण मनुष्य के सुख के सामान अधिकतर औरों के हाथ में है और निष्काम सेवाकारी जन के सुख का सामान अधिकतर उसके अपने ही हाथ में है और दुख का सामान औरों के अन्दर है कि जिस दुख से वह समय आने पर नीच आत्माओं से जुदाई की हालत में अवश्य मोक्ष पा सकता है।

(2) प्रत्येक मनुष्य जीना चाहता है और मरना नहीं चाहता, परन्तु स्वार्थी मनुष्य नेचर के जीवन विषयक नियम के विरुद्ध जाने के कारण अपनी उक्त जीने की आकांक्षा को ठीक तरह पूरा नहीं कर सकता और वह स्वाभाविक आयु से पहले ही इस दुनिया में या अगली दुनिया में मर जाता है। निष्काम सेवाकरी मनुष्य नेचर के जीवन विषयक नियम को पूरा करने के कारण अधिक से अधिक काल तक जीने के योग्य बन जाता है। ऐसा जन यदि किसी कारण से दुनिया में जल्दी अपने स्थूल शरीर को छोड़ने के लिए मजबूर हो तो उसके बाद सिवाय किसी विशेष दुर्घटना के उच्च प्रकार का सूक्षम शरीर लाभ करके चिरकाल तक जीने के योग्य बन जाता है।

(3) स्वार्थी मनुष्य के जीवन का दायरा बहुत तंग होता है और निष्काम सेवाकारी जन के जीवन का बहुत अधिक होता है। जो जन औरों को हानि पहुंचाकर जीना चाहता है, उसे जहां कहीं अपने से अधिक शक्तिशाली अस्तित्वों से वास्तव पड़ेगा, वहां पर वह उसे खत्म कर डालेंगे और ऐसा अस्तित्व मरने के बाद किसी अच्छे लोक में नहीं जा सकेगा और उसके जीवन का क्षेत्र दिनों-दिन तंग होता जाएगा और आखिरकार वह इसी हालत में चलते-चलते बिना आई मौत का शिकार हो जाएगा। परन्तु इसके विरुद्ध जो मनुष्य निष्काम सेवाकारी होता है, उसके लिए क्या इस दुनिया में और क्या अगली दुनिया में सेवा के लिए जो क्षेत्र होता है, वह बहुत बड़ा और असीम होता है। संतान अनुरागी के लिए वह जन सीमित हैं कि जिनकी सेवा करके वह जीना चाहता है और उनके न रहने से उसकी सेवा और क्षेत्र का सामान समाप्त हो जाता है, परन्तु दूसरे की निष्काम उच्च सेवा करने के आकांक्षी जन के लिए ऐसे जन प्रत्येक स्थान पर वर्तमान हैं कि जिनकी सेवा करके वह जीता रह सकता है।

(4) स्वार्थी मनुष्य अपने आत्मिक जीवन के विचार से दिनों-दिन अधिक से अधिक रोगी, पागल, दुखिया और दुर्बल होता चला जाता है और आखिरकार अपने व्यक्तिगत अस्तित्व के विचार से पूर्णत: खत्म हो जाता है। परन्तु परोपकारी जन दिनों-दिन अधिक से अधिक ज्योर्तिमान, सुन्दर और बलवान, इसलिए श्रेष्ठ सुखों का भागी होता चला जाता है और अधिक से अधिक देर तक जीने के योग्य हो जाता है।

(5) स्वार्थी मनुष्य मरने के बाद ऐसे जनों में जाकर रहने का अवसर पाता है कि जो उसकी तरह स्वार्थी होते हैं, इसलिए ऐसी अवस्था में वह जहां अपने नीच भावों की आग में जलता रहता है, वहां दूसरे नीच अस्तित्वों के

भयानक बुरे व्यवहारों से भी कई प्रकार के अनुचित दुख पाता रहता है। निष्काम सेवाकारी जन मरने के बाद ऐसे मनुष्यों में जाकर वास करने का अधिकारी होता है कि जो परोपकारी होते हैं और इसलिए ऐसा मनुष्य अपने उच्च जीवन की अमूल्य बरकतों से मालामाल होता है, वहां औरों के श्रेष्ठ जीवन के उच्च व्यवहारों से भी बहुत बड़ा लाभ उठाता है।

(6) स्वार्थी मनुष्य इस दुनिया में एक ऐसा बुरा दृष्टांत छोड़ जाता है जो क्या उसके निकट संबंधियों और क्या अन्य जनों की तबाही में सहायक होता है और परोपकारी जन ऐसा दृष्टांत छोड़ जाता है जो क्या उसके संबंधियों और क्या अन्य जनों की भलाई में सहायक बनता है और इस प्रकार स्वार्थी मनुष्य को मरने के बाद औरों की ओर से बुरी आशीष मिलती रहती है और परोपकारी जन को शुभ आशीष।

(7) स्वार्थी जैसे और किसी जन का सच्चा शुभचिंतक नहीं होता और नहीं हो सकता, वैसे ही अपना भी शुभचिंतक नहीं होता और नहीं हो सकता, किन्तु वह जैसे औरों का दुश्मन होता है, वैसे ही अपना भी शत्रु होता है, परन्तु इसके विरुद्ध निष्काम सेवाकारी जन जैसे औरों का भला चाहता है और करता है वैसे ही अपना भी भला चाहता और करता है। अनेक अवस्थाओं में वह अपने शत्रुओं के लिए भी हितकारी प्रमाणित होता है, जबकि इसके विरूद्ध स्वार्थी मनुष्य अनेक अवस्थाओं में अपने उपकारियों को भी हानि पहुंचाने से नहीं रुकता।

(8) जहां स्वार्थी मनुष्य को अपने मरने के समय कई प्रकार के अनुचित दुख उठाने पड़ते हैं और शोक से हाथ मलने पड़ते हैं, वहां परोपकारी जन को ऐसे दुख हीं उठाने पड़ते बल्कि वह शांति के साथ इस अधम दुनिया को छोड़ कर किसी उच्च लोक में जाता है।

तब प्रिय पाठकगन, आप देखें कि स्वार्थी और विशुद्ध परोपकारी जनों के जीवनों के नतीजे में कितना जमीन - आसमान का अन्तर है। जो जन इस सच्चे अन्तर को भगवान देवआत्मा की देव ज्योति में देखने की योग्यता रखते हों, उनके लिए इस बात की नितांत आवश्यकता है कि वह यदि अभी तक स्वार्थपर्ता का जीवन व्यतीत करते हैं, तो वह शीघ्र स्वार्थ परायण अवस्था से उद्धार लाभ करें और विशुद्ध परोपकार अनुरागी बनने के लिए सच्चा फिकर और संग्राम करें और समय रहते - रहते परोपकार के जीवन की उच्च अवस्था को लाभ करके और भगवान देवआत्मा के साथ उन्नतशील सम्बंध में बंध कर आत्मिक भलाई का मार्ग खोल सकें, वरना ठीक समय व्यतीत हो जाने पर उनकी कुछ पेश नहीं जाएगी और उनके लिए केवल अत्यंत हानिकारक दुखों की आग में जल - जल कर खत्म होना बाकी रह जाएगा।

(सत्यदेव संवाद 11 जून 1940)

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : - श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229,
2716914

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ (G)
Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh
Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

देव समाज के इतिहास का एक और पन्ना लोप हो गया।

(बीबी सत्यावती जी फेरूशहर)

मानवता के महा सौभाग्य कि विकास क्रम में आज के युग में परम पूजनीय भगवान देवात्मा जैसी महा विचित्र, महा अलौकिक, महा हितकर, अनुपम हस्ती प्रगट हो गई, जिन्होंने आर्विभूत होकर अपने प्रभावों और अनथक यत्नों से सुखों के गुलाम वा बन्धुए मनुष्यों के भीतर उच्च परिवर्तनों के क्रिश्में पैदा करने शुरू किए। ऐसे परिवर्तित जनों को लेकर आठ पाप त्यागी, मिथ्या विश्वासी, झूठे मनघडन्त वहिमी, भ्रम, भुलेखों और अन्य गप्पों से पूर्ण रहित वा मुक्त करके ऐसे सौभाग्यवान जनों को लेकर एक निराली समाज क़ायम की, जिसका नाम देव समाज रखा। मानवता में नया अजूबा जो आज तक किसी ने नहीं किया और न कर सका है और न कर सकता है कर, दिया जिसने भारत के अन्दर अनोखा नाम और इतिहास रचा, जिसका सिक्का उस समय की अंग्रेज सरकार, उसके प्रतिष्ठित गर्वनर, वायसराय की कौंसल के मैंबर तक मानने के लिए तैयार हो गए थे। उस समाज के एक साधारण से कांड का हिस्सा उक्त बीबी जी भी थी। जिस कांड को आरम्भ होते, और अपनी पूर्णत: प्राप्त करते मैंने अपनी आंखों से देखा है।

बीबी जी ऋषि रूप सम्मान के योग्य राम सिंह जी की छोटी पुत्री थी।

श्रीमान राम सिंह जी का परिवर्तन एक विशेष क्रिश्मा था। श्रीमान राम सिंह जी कहलाने वाले एक रामदासीया वर्ग से सम्बन्धित थे, जो अपने पेट पालने के लिए खेती के काम में बहुत मेहनत, मजदूरी करते थे। बड़े कट्टर मिथ्या विश्वासी थे। किसी कहलाने वाली देवी के भगत थे। लोग उनको भाई जी कहकर पुकारते थे। देवी से मन्नत मांगने के लिए उसके नाम का रोट पकाते थे। गांव के जोहड़ में एक टांग पर खड़े होकर देवी की आराधना करते। बड़ी उमर होने पर अपनी शादी हो जाने के लिए प्रार्थना करते। बहुत ताकतवर थे। बड़ों बड़ों का अपमान कर देते। बहुत गुस्सैल स्वभाव के कारण झटपट अपनी बारीक तारों से जड़ा हुआ डंडा निकाल लेते और विरोधी के सिर पर ज़ोर से मार देते। विरोधी के सिर पे मोटी खून की धार बह निकल पड़ती। श्रीमान जी वास्तव में फिरोज़पुर जिले के घलखुरद गांव के रहने वाले थे। निराली धर्म देव समाज के मिलने पर वह फिरोज़शाह में आ गए। वहां पर उनको पुराने कर्मचारी श्रीमान गोपीचन्द ने सम्भाल लिया। श्रीमान जी वहां के स्थानीय गर्लज़ स्कूल के मैनेजर भी थे। और क्षेत्र कर्मचारी भी थे। उसी स्कूल में बीबी सत्यावती जी पढ़ीं। शुरू में बीबी जी को घलखुर्द के स्कूल में और बाद में फिरोज़शाह के बोर्डिंग स्कूल में पढ़ने के लिए भेजा। श्रीमान राम सिंह जी और उनकी धर्म पत्नी अकेले रह गए। वह आपस में झगड़ते रहते, एक दूसरे को दोष देते कि लड़की को क्यों दूर भेजा और उलाहने भी देते कि अब क्या वह बी.ए. पास हो जाएगी?

देव समाज में आकर श्रीमान राम सिंह जी के जीवन में आश्चर्यजनक परिवर्तन आया, वह सचमुच ही एक ऋषि रूप बन गए। उनका जीवन बहुत संग्रामशील बन गया था। एक मिनट भी वह खाली नहीं बैठते थे। उन्होंने समाज के लिए दान मांगने के लिए डिब्बा ले लिया। जो इतने गुस्सैल थे, उन्होंने दान मांगने के लिए बहुत निरादर और झाड़ें खांई। परन्तु इतने दीन हो गए कि उसकी परवाह नहीं करते थे। गुस्से पर काबू किस प्रकार पाया, यह देव प्रभाव संगत का बहुत गहरा असर था। उनके अनथक सेवा और परोपकार के भावों ने उनके बृताव को ठण्डा, मीठा और बहुत सहनशील बना दिया। उनका मीठा स्वभाव अब दूसरों के हृदयों को गहराई से छू जाता था।

अपनी पत्नी के प्रति उनका बेहद कठोर व्यवहार बदला और वह एक वफादार, सेवाकारी और प्रिय जीवन साथी बन गए। उनकी धर्म पत्नी बीमारी से बिस्तर से उठ ही नहीं सकती थी, श्रीमान ने उनकी अनथक सेवा की, खाना बनाया, कपड़े धोए, उनके तिमारदारी यहां तक

पहुँच गई कि अस्पताल ले जाने के लिए अपने पास पैसे कम होने से उन्हें पीठ पर लादकर हस्पताल ले जाते, जो-2 भी इस दृश्य को देखता, अश: अश: कर उठता।

उनके त्यागी जीवन ने और उच्च जीवन ने बहुत सारे जनों को बदल दिया। बाबू बलवन्त राए जी रेलवे में टी. टी. थे और उनका परिवार इसका एक उदाहरण है। उनको देखकर श्रीमान मुन्शी राम जी जो बड़े व्यापारी थे और प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी थे, लाला लाजपतराए जी के नज़दीकी साथी थे उनको बदला। लाला शादी राम जी जो एक बड़े कारखाने के मालिक थे उनकी बच्ची श्रीमान राम सिंह जी के साईकल की लपेट में आ गई और वह गिर गई। उनकी पिटाई भी की गई, परन्तु उन्होंने बच्ची को गोदी में उठा लिया और चन्द रुपये देकर परिशोध द्वारा दिल को शुद्ध किया। उस बच्ची की सेवा करते रहे और उनका मन जीत लिया। इसी प्रकार अपने सरल और स्नेह भरे व्यवहार से बलवन्त राए जी को जीता, वह रेलवे स्टेशन से उन्हें भगा देते थे, अब उन्हें स्टेशन पर दान मांगने की इजाज़त दे दी आदि आदि।

श्रीमान राम सिंह जी की श्रद्धा और दीनता अपने विशेष उपकारी श्रीमान गोपीचन्द जी के प्रति आंखों देखने की चीज़ थी। श्रीमान राम सिंह जी ने घरबार छोड़कर मोगा विकासालय में डेरा लगा लिया था। श्रीमान गोपीचन्द जी ने जब मोगा में आना होता, तो श्रीमान राम सिंह जी को चाव चढ़ जाता। वह उनके बिस्तर को धूप लगवाते, उनकी चारपाई बिछाते, तरह 2 से उनकी सेवा करके तृप्ति पाते। उनका बेटा मिलटरी में भर्ती हो गया था और बीबी सत्यावती जी फिरोज़पुर से दसवीं कलास फसट कलास में पास करके मोगा में अपने माता पिता के पास आ गई और वह भी विकासार्थी बन गई। मैं भी उस समय विकासालय की संगत करता था और विकासार्थी बन गया था।

और भी लड़कियां विकासार्थी बनी हुई थी। हम सबसे सीनीयर हकीम सीताराम राए पुर रानी जी की पोती प्रेम जी थी, जो एम. ए., बी. टी. करके आई थी, वह बहुत ही कमाल थी। बाद में उनकी शादी हो गई, परन्तु अपनी दोनों छोटी बहनों के साथ हमेशा अच्छे दर्जे की सेविका रही हैं। मेरे साथ मेरठ के श्रीमान राम चन्द्र जी के दोनों पुत्र और हरिद्वार से श्रीमान लहौरी मल जी का पुत्र दर्शन था। हमसे सीनियर कर्मचारी साहिबान श्रीमान पंडित गिरवर प्रसाद जी, श्रीमान विकास देव जी, श्रीमान गुरूसेवक सिंह जी आदि 6-7 जन थे। बड़ी सुहावनी रौनक थी। सारे विकासालय और नारी आश्रम समेत बहुत गहिमा गहम थी। उस समय की कितनी ही यादें मेरी कभी न भूलने वाली यादों में खूब ताज़ा हैं।

बीबी सत्यावती जी के जीवन में श्रीमान धर्मवीर जी प्रिंसीपल जी का भी बहुत योगदान रहा है। फिरोज़पुर से जब वह मोगा में आई तो उन्होंने भरी जवानी में अपना जीवन गुरू के दर पर भेंट कर दिया। प्राय: 87 वर्ष की उमर तक पहले मोगा में, फिर चण्डीगढ़ के भवन में सेवाकारी होती रही। सैक्टर 36-बी में से ही उनकी अर्थी का उठना भी उनकी वफादारी का चिन्ह था।

मोगा में उस समय श्रीमान ईश्वर सिंह जी महाराज विकासालय के प्रिंसीपल साहिब थे। विकासालय का सेहन भरा भरा लगता था। गर्मी के दिनों में क्या सेहन में और क्या विकासालय की दूसरी छत के ऊपर धर्म सम्बन्धियों की चारपाईयों की लाईनों की लाईने लगी होती थी, खूब रौनक होती थी। बड़े ही सुहावने दिन थे। श्रद्धेय श्रीमान जी क़ियामत की नज़र रखते थे। एक बार मैं भटिंडा मन्दिर में गया हुआ था। पहली शाम बीबी सत्यावती जी वहां पहुँची हुई थी। मेरे मोगे पहुँचने पर श्रद्धेय श्रीमान जी फिक़रमन्द दिखे, उन्होंने पूछा कि वहां रात कैसे रहे। मैंने दृढ़ता और उत्साह से उत्तर दया कि सब कुछ बिल्कुल ठीक ठाक रहा, यह सुनकर श्रीमान जी को तसल्ली हुई और वह फिक़र मुक्त हुए।

बीबी जी सन 1967 तक मोगे रही, जब श्रद्धेय श्रीमान जी परलोक सिधार गए, तो सब हालात बदल गए। माननीय श्रीमान गुरूवन्त सिंह जी का पहरा आ गया। समाज में एक बार तो सुनसान हो गई। समाज हमेशा के लिए यतीम हो गई। 1971-72 में श्रीमान धर्मवीर जी अचानक परलोक सिधार गए। धर्मवीर जी के होते हुए,

काका जी अर्थात S.P. Kanal Sahib और श्रीमान गुरूबख़्श सिंह जी कौंसल के मैंबर बन गए थे। नौजवान श्रीमान गिरवर प्रसाद जी अपने 6 - 7 साथियों के साथ समाज के काम को छोड़कर चले गए थे, जो कुछ साल बाद वापिस आ गए थे।

नारी आश्रम में उच्च लोकवासी श्रीमति सुशीला देवी जी के ईलावा तीन और स्त्रियां रह गई, श्रीमति ज्ञानवती जी ने शादी करवा ली और भटिंडा क्षेत्र सम्भाल लिया। उन्होंने सारी उमर बहुत संग्राम करके भटिंडा मन्दिर की सम्भाल की और उस क्षेत्र को आबाद रखा। मन्दिर और शहर के स्थानीय वा इर्द गिर्द के सेवकों को सम्भाला। अब 87 - 88 वर्ष की उमर में मौत का इन्तज़ार कर रही हैं।

बीबी सत्यावती जी विकासार्थी थीं और बीबी शीला जी जो कश्मीर से बहुत विरोधी हालातों में से बहुत कठिनाई में से गुज़रकर आई थी, उन दोनों की बहुत सुन्दर यादें देव समाज के इतिहास का सुनहरी भाग है।

सत्यावती जी को नेचर ने बहुत सुरीले गले का वरदान दिया था। वह बहुत सुरीली आवाज़ में गाने में निपुण थी। उनका और बीबी शीला जी का गले में बाजा डालकर पूरे उत्साह और जोश से समाज के क्षेत्रों में वा उत्सवों, सत्संगों में गाना बड़ा ही सुन्दर दृश्य था। विकासालय के सैशनों, उत्सवों पर, महोत्सवों पर, यज्ञ के दिनों में और सत्संगों के बड़े समागमों में पूरे जोश के साथ भजन गाना बहुत आकर्षित करता था। उनकी यह उत्तम सेवा बहुत बड़ी समाज को दान है।

बीबी जी के सद्गुणों का एक और सुन्दर पहलू था, उनकी तीक्षण बुद्धि और मान्सिक शक्तियां। श्रद्धेय श्रीमान जी को उनके इस गुण का पूरा एहसास था। उन्होंने बीबी जी को और अन्य विकासार्थियों को अपनी पढ़ाई करने और उन्नति करने में पूरा सहयोग दिया। इसी कारण वह M.A. B.Ed कर गई। बीबी शीला जी ने भी शायद रतन, भूषण की परीक्षा पास कर ली थी।

समय की मांग के अनुसार बीबी शीला जी ने मण्डी फूल में डेरा लगा लिया और अपने आख़िरी समय तक प्रचार विभाग से जुड़ी रहीं। बीबी सत्यावती जी हैड आफिस में ही रहीं और प्रचार पार्टीयों के साथ खुशी खुशी शामिल होती रहीं।

एक बार मुझे याद है, मैं भी श्रद्धेय श्रीमान मेवा सिंह जी के साथ प्रचार पार्टी में शामिल था। हम सभी बीबी शीला जी के समेत कल्याण से होकर भैणी गांव में रुके, वहां बीबी अमरजीत, मास्टर श्रीमान गुरूदयाल सिंह जी की पुत्री सरकारी टीचर थी। वहां से चलकर हम मण्डी फूल मन्दिर में पहुँचे। जून जुलाई के दिन थे। रास्ते में बारिश हुई। जगह जगह पर पानी खड़ा था। श्रद्धेय श्रीमान जी को मुझे अपनी पीठ पर बैठाकर पानी पार करवाने का फख़्र हासिल हुआ। श्रद्धेय श्रीमान जी हांप रहे थे इस प्रकार हम मण्डीफूल पहुँचे। बीबी शीला जी भी लाल सुर्ख हो गई थी फिर भी मन्दिर में पहुँचने पर बीबी जी ने नींबू और बर्फ का प्रबन्ध किया और शिकंजवी तैयार की, इस प्रकार श्रीमान जी ठीक महसूस करने लगे और सबको सुख का सांस आया।

बीबी शीला जी कल्याण साधन मन्दिर आकर बहुत खुश होती। एक बार माननीय श्रीमान बलबहादुर सिंह जी अपने स्कूटर पर बिठाकर उन्हें कल्याण माता - पिता उत्सव पर ले गए। वहां पर गुरूमहाराज के प्रभावों के क़िश्में पैदा हुए। बीबी शीला जी प्रभावित हो गई और खड़े होकर भाव प्रकाश किया कि सारी समाज में यह कोना जिन्दा है। उन्होंने आकर बहुत खुशी प्राप्त की।

बीबी सत्यावती जी में बहुत खूबीयां थी। वह भजन गाने के भिन्न सभाएं करवाती, अनुष्ठान करवाती रही हैं। उन्होंने बहुत सारे भजन स्वयं बनाए, यह शौक भी उनका अलौकिक था। उन्होंने पर्वत आश्रम सोलन पर भी भजन बनाए, वह भजन हमेशा के लिए यादगार बन गए। वह बहुत वर्षों तक देव समाज के त्यौहारों की तालिका बनाती रहीं, वह इस कार्य में पूर्णत: निपुण थी।

उन्होंने एक ऐसा शानदार भजन जीवन की सचाईयों पर बनाया, वह भी पूरा इतिहास और यादगार बन गया था। यह भजन दिल को छू जाता है। यदि मैं सत्य कहने का हौसला करूं तो उन्होंने मनुष्य के जीवन चरित्र का ही इसमें उल्लेख कर दिया है।

वह भजन इस प्रकार है :-

जीवन के दाता न तुमको भुलाऊं,
ज्योति के दाता मैं तुमको ध्याऊं।
मेरा नीच जीवन है मुझको भुलाता,
मुझे हर कदम पर गढ़े में गिराता।
बचूं मै तभी जब शरण तुमरी आऊं,
भुलाऊँ तुम्हें जब मैं मृत्यु को पाऊं,
है जीवन यह मेरा सुखों की कहानी,
यह सुख हैं मुकम्मल पतन की निशानी
छोड़ अपनेपन को, मैं तुमको रिझाऊँ,
तभी उस पतन से सुरक्षा मैं पाऊं।
बर्बादियों की अजब दास्तां हूं,
है अपना जो दुश्मन मैं वह इन्सान हूं,
बचाते हो तुम जब तुझको दिल से बुलाऊं,
मैं मरती हूँ जब तुमको दिल से भुलाऊं
है बिनती मेरी यह स्वीकार कर लो,
मेरी नीच रूचियों पर अधिकार कर लो।
तभी ही धर्म की दिग जा मैं पाऊं
तभी जन्म अपना सफल मैं बनाऊं।

मनुष्य है ही सुखों का आशिक और अनुरागी। सुख सम्बन्धी हमारी चिन्ताएं और क्रियाएं और शैतानियां इन सुखों से ही उपजती हैं। हम में से कोई इन्सान भी ऐसा नहीं जो शैतानियों की आग के काले दागों से बचा हो।

फरीद जी ने कहा है :-

"फरीदा जे तूं अक्ल लतीफ, तूं काले लिख न लेख
अपने गिरेबां में, सिर नींवां करके देख ।"

हमारे सब के भीतर शैतान बैठा है। मुझे क्या हक हासिल है कि मैं अपने अन्दर मुंह नीचा करके देखने के स्थान पर, दूसरों के दोष निकालकर मुर्दा वीरान करूं।

बीबी सत्यावती जी का तुच्छ धर्म सम्बन्धी

-बलदेव सिंह

सोचें हम कहां जा रहे हैं?

यह एक पुरानी कहावत है कि जब हम बबूल के पेड़ बोएंगे तो वहां से आम की आशा रखना व्यर्थ है। इसका भावार्थ है कि जब किसी और के लिए दुख और मुसीबतें खड़ी करते हैं, दूसरों की नीदें हराम करते हैं, अन्याय करते हैं तो स्वयं सदा खुश और सुखी रह सकेंगे, उसके परिणाम न भुगतेंगे, यह नेचर के विकास के नियम के सरासर विरूद्ध है। बेशक कुछ समय के लिए दूसरों को तड़पता देखकर कुछ जन खुश नजर आते हों, परन्तु नेचर ऐसे जनों पर हंसती है कि उसके नियम अन्यायकर्ताओं, शोषणकर्ताओं और दूसरों के जान माल, इज्जत और शान्ति भंग करने वालों को पीस कर रख देंगे। यह रोज की घटनाएं हमारे सामने हैं, परन्तु मनुष्य का अभिमान और उसकी हिंसक प्रकृति यह देखने नहीं देती और उस पर उसे विश्वास नहीं करने देती।

भारत एक धर्म निरपेक्ष और शान्ति प्रिय देश रहा है। उसके भीतर भी यह सत्य है कि नीच भावों ने अपना रंग दिखाया है, परन्तु सबसे अधिक हमारा पड़ौसी देश पाकिस्तान यहां दंगे फसाद करवाए हैं वहां भी आतंकवाद का नंगा नाच हो रहा है। जिसके कारण अनगिणत जानें गई हैं, विकास के कार्य ठप्प हुए हैं, छोटे छोटे बच्चे यतीम हुए हैं, खून की नदियाँ बह गई हैं। दहशत फैली है, इस सब का अनुमान करना ही कठिन है। पाकिस्तानी राजनैतिक नेता ऐसा करके खुश होते रहे कि हम अपने पड़ोसी देश को कमजोर कर रहे हैं उसको सबक सिखा रहे हैं।

अब उसी पाकिस्तान के अन्दर दहशत का राज है। हत्याएं हो रही हैं। शादी ब्याहों में गोली चलना आम बात है। लोग भय और आतंक के साए में जीते हैं। उसे जिस प्रकार की अशान्ति, निर्धनता का दुख उठाना पड़ रहा है, यह सबके सामने है।

रमजान के त्यौहार को वह पवित्र त्योहार मानते हैं, इस पवित्र महीने में खून खराबा तीव्र से तीव्रतर होता रहा है। शिया और सुन्नी दोनों एक दूसरे के खून के प्यासे

रहे हैं। आज के नेताओं के लिए इन हालातों पर काबू पाना असम्भव सा दिखाई देता है। वह अपने आपको सर्वथा असहाय अनुभव कर रहे हैं। अब पाकिस्तानी अधिकारियों का यह विश्वास कि वह अपने कुकर्मों से भारत को कमजोर कर देंगे, बिल्कुल खोखला सिद्ध हुआ है, बल्कि भारत और अधिक मजबूत हुआ है। अन्याय आगे झुककर नहीं, उसका सामना करके दूसरे देशों के आगे उसकी छवि निखरी है, परन्तु पाकिस्तान का अपना सबसे बड़ा मित्र अमेरीका भी उसके विरुद्ध चेतावनियाँ दे रहा है। इतिहास गवाह है कि प्राय: आतंकवाद की उमर 10 साल से अधिक नहीं होती ऐसा क्यों है? इसलिए कि किसी पर अन्याय करना, दूसरों के अधिकारों को अपहरण करना, दूसरों की सुख शान्ति को भंग करना यह नेचर के नियमों के विरुद्ध है, विनाशकारी है, नेचर के विकास के विरुद्ध नीतियां अधिक देर तक नहीं चल सकतीं।

पंजाब में इन्दिरा गांधी ने अपनी राजनैतिक समझ से भिंडरावाला को शक्तिशाली बनाया था, उनके विचार में उसकी पंजाब में विरोधी ताकतों के लिए वह एक शक्ति बन जाएगा, परन्तु उसी ने आतंकवाद को जन्म दिया, और उसी की लपेट में इन्दिरा गाँधी जी स्वयं आ गई और अपनी जान से हाथ धो बैठी।

यह तो देशों और राजनैतिक नेताओं की बातें हैं, परन्तु न्याय के विरुद्ध चलने वाले चाहे किसी समाज हों या किसी संस्था में उनका परिणाम भी यही होता है। व्यक्तिगत रूप से तो ऐसे जन बुरे परिणामों को भुगतते ही हैं, परन्तु समाज वा संस्था का भी नाश कर देते हैं। ऐसे जनों के चंगुल से आजाद होने पर भी ऐसी समाजों और संस्थाओं को अपने पुराने स्वच्छ रूप में आने में सालों साल लग जाते हैं।

एक एक व्यक्ति अपना स्वार्थ सिद्ध करने, अपने आपकों शक्ति सम्पन्न बनाने, अपने निकटी सम्बन्धियों को लाभ पहुंचाने के लिए एक ओर योग्य जनों के प्रति उपरोक्त भावों के पूरा न होने पर ईर्षा द्वेष से भर कर अपने उनकी निन्दा वा झूठे दोषारोपण करता है, और दूसरों पर अन्याय करता है और अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए अपहरणकर्ता भी बनता है। साधारण बुद्धि रखने वाले या स्वार्थी जनों को भड़काकर अपने पक्ष को मजबूत करने में अपनी सफलता देख कर खुश और सन्तुष्ट होता है। ऐसे नीच भावों के पंखों पर बैठकर सोचता है कि वह असमान छू लेगा, परन्तु उस समय वह नेचर के नियमों को भूल जाता है, पुराने उदाहरणों को भूल जाता है। मुगलों का भारत पर सर्वछत्र राज्य था, परन्तु जब वह अन्याय पूर्ण नीतियों पर उतर आए, उनका नामोनिशान मिट गया। कितने तानाशाह हुए, जिनके आगे दुनियां झुक गई, परन्तु नेचर नहीं झुकी। उन्हें उसी प्रकार के दुख सहने पड़े, जो उन्होंने दूसरों को दिए थे। नेचर अपने न्याय का पलड़ा बराबर रखती है। लेकिन अन्यायकर्ता भूल जाते हैं और जिन्होंने उनके समय में अन्याय झेला होता है, वह समय उनके लिए वापिस नहीं आ सकता उनकी आहें रंग तो लाती हैं, परन्तु साधारणत: अगली नस्ल के लिए।

क्या ही अच्छा हो यदि देशों और समाजों के नेता इस बात को समझ सकें कि दूसरों को बर्बाद करके कोई आबाद नहीं हो सकता। कुटिल नीतियों से चाहे वह कोई भी नेता हो आखिर जनता का विश्वास खो बैठता है। फिर गल्त आदमियों के साथ गल्त समझौते करने पड़ते हैं, जो किसी भी देश, समाज वा संस्था के लिए घातक सिद्ध होते हैं। अयोग्य जन अपनी गल्त कीमत लगा बैठते हैं, फिर उनके चुंगल से खुद ऐसे नेताओं को निकलना कठिन हो जाता है। ऐसे उदाहरण जगह जगह मिलते हैं। ऐसी स्थिति में प्रबन्धकर्ता या शासक चापलूसों और अवसरवादियों के हाथों कठपुतली बन जाते हैं।

परन्तु यदि समय रहते रहते दूसरों पर आरोप लगाना छोड़कर अपने व्यवहारों के बारे में सोचना आरम्भ करें, अपने पर लगाए जाने वाले आरोपों की छानबीन करें, आलोचना को उदारता से स्वीकार करें, अपनी छवि को स्वच्छ करने के लिए हर प्रकार की छानबीन के लिए तैयार रहें, यदि उनकी नीतियां गल्त हैं तो उन्हें सहर्ष स्वीकार करके सुधारें, गल्त कामों के लिए सच्चे दिल से क्षमा याचना करें, तो सही मार्ग मिल सकता है, यह रास्ता बड़ा सीधा है परन्तु बहुत कठिन है।

किसी आरोप से इन्कार करने से कोई भी मनुष्य आरोप मुक्त नहीं हो जाता, परन्तु छानबीन के बाद जब सत्य सामने आता है, तो प्रत्येक नेता की छवि और भी निखर सकती है। पक्षपात रहित न्यायिक जांच ही इसका ईलाज है, परन्तु मनुष्यों का अहं और स्वार्थ यह सब कैसे करने दे? आज के इस समय में वायरस का कहर छाया हुआ है, प्रत्येक मनुष्य डर के साए में जी रहा है। अपनों को मरते देखकर उनको छू नहीं सकते। किसी का proper दाह संस्कार नहीं हो रहा है। यह कुआं भी एक वायरस को फैलाकर खोदा गया है, परन्तु नेचर और विज्ञान का मनुष्य द्वारा दुरुपयोग प्रत्येक देश को भुगतना पड़ रहा है। परन्तु मनुष्यों को घरों में बन्द करके नेचर अपने स्वच्छ रूप को दोहरा रही है। पशु, पक्षी बेख़ौफ चहचहा रहे हैं। मनुष्य की यह दुगर्ति किसने की? मनुष्य ने स्वयं यह कांटे बोए हैं। यदि अभी भी मानवता कुछ सम्भल जाए, तो यह आने वाले नसलों के लिए बहुत बड़ा उपकार वा उपहार होगा। सोचें कि हमने कहां जाना था और किधर जा रहे हैं? मार्ग बदलें, अपनी सोच बदलें, अपने व्यवहार बदलें, फजूल खर्चियां छोड़ें, जीवन की असारता को समझें, ताकि आने वाला भविष्य उज्जवल हो सके।

(सुरजीत बराड़)

कहां गए वह लोग?

आज लाक डाऊन का 36वां दिन है और दो हफ्तों के लिए और बढ़ा दिया गया है। इन दिनों में कुछ हटकर करने का समय मिला, जिसमें कुछ पुस्तकों का अध्ययन लगातार करने का अवसर मिला पर अचानक मेरे हाथ में "आत्म परीक्षण" नामक पुस्तक लगी, जो श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी के परम पूजनीय भगवान देवात्मा के सम्बन्ध में अपने श्रद्धा, कृतज्ञता, आकर्षण भावों को लेकर साधनों के पत्र हैं। और इससे आगे अपने अहं वा अन्य भावों से मोक्ष पाने के लिए जो साधन किए हैं, वह इतने प्रभाव-दायक हैं कि जिन्हें पढ़ने से कुछ भी अधिकारी हृदय रखने वाले जन को अपना कुछ न कुछ नीच रूप अवश्य सामने आने लगता है। उनके इन साधनों की कथा सारे विश्व में निराली कथा है। किस प्रकार वह इन साधनों में से गुज़रकर सोना बन गए, कैसा सौभाग्यवान वह अपने आपको समझते थे, उसको हम तुच्छ आत्मा तो अंश भर भी अनुभव नहीं कर सकते। इन साधनों में से गुजरकर वह देवात्मा के मिशन के दीवाने बन गए और देव समाज में बहुत बड़े 2 पदों के अधिकारी बनें। परन्तु उन्हें गुरू के चरणों में रहने से बढ़कर कोई पद आकर्षित नहीं करता था। उनके विषय में कुछ घटनाएं श्रद्धेय कनल जी ने लिखी हैं, जो इस पुस्तक में दर्ज हैं, जिन्होंने मेरे हृदय को बहुत प्रभावित किया है और बार 2 यह प्रश्न उठता है कि कहां गए वह लोग?

कनल जी लिखते है :-

मैं जनवरी सन 1918 में सिन्ध को छोड़कर लहौर में सत्य देव भगवान देवात्मा के श्री चरणों में पहुँचा था। मैंने उस समय श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी के जिस आन्तरिक रूप के दर्शन किए उसे मैं कभी नहीं भूल सकता।

"इन्हीं दिनों में एक हृदय विदारक घटना उत्पन्न हुई, जिसका भगवान के देव हृदय पर बहुत गहरा आघात लगा। यह घटना बेशक बहुत भयानक थी, परन्तु बहुत सारा कसूर उस आत्मा का था जिसने अबोधता से यह घटना उत्पन्न की थी। (बता दें कि किसी जन की किसी बहुत बड़ी ग़ल्ती के लिए श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी ने कुछ सख़्त शब्द कह थे, इस डर से यदि श्रीमान जी के द्वारा दूसरे लोगों को पता लगेगा तो उसकी बदनामी होगी, उसने बहुत घातक कदम उठाया) इस दुर्घटना के फौरन बाद श्रीमान जी भगवान देवात्मा के हजूर में पहुँचे और परम पूजनीय भगवान के दुखी हृदय का दृश्य देखकर धाएं मार मारकर रोने लगे और अपने आपको पीटा। फिर

जब वह अपने कमरे में वापिस गए तब मन्त्री देव समाज ने उनके पास जाकर भगवान देवात्मा का सन्देश पहुँचाया कि इस गल्ती के कारण आपको समाज के सारे पदों, यहां तक कि कर्मचारी के पद से भी अलग किया गया है। अब आप अपने आपको साधारण सेवक समझें। श्री मन्त्री जी का यह ख़्याल था कि श्रीमान जी इस आज्ञा को सुनकर न मालूम किस अवस्था में पहुँच जाएंगे। इसलिए उन्होंने डरते डरते यह सन्देश उन तक पहुँचाया। परन्तु भगवान देवात्मा के साथ जीवन्त सम्बन्ध रखने वाले और अटल श्रद्धा और अटल विश्वास से भरे हुए श्रीमान जी ने उसके उत्तर में अपने भावों का इस प्रकार प्रकाश किया :-

"परम पूजनीय भगवान की बहुत बड़ी कृपा कि मुझे अपने दरबार से बिल्कुल चले जाने की आज्ञा नहीं दी, अन्यथा मझे उनके बिना दुनिया में अन्धेरा ही अन्धेरा नज़र आता है और अपने लिए कहीं ठिकाना दिखाई नहीं देता और न उनके कार्य के बिना मुझे कुछ और करने को सूझता है। यदि भगवान मुझे यहां रहकर प्रतिदिन यहां ही टट्टीयां साफ करने पर भी लगावें तो मुझे अपना बहुत बड़ा सौभाग्य मालूम देता है। मुझे कोई पद नहीं चाहिए और न मुझे किसी मनसब की ज़रूरत है। भगवान सिर्फ मुझे अपने मन्दिर के किसी कोने में रहने की आज्ञा दे दें, मुझे यहां से न निकालें।

इन भावों को पढ़कर कौन सा ऐसा हृदय होगा, जो श्रीमान जी के चरणों में नहीं झुक जाएगा। कहने को तो कई कह देते हैं कि हमें पद नहीं चाहिए .....किन्तु..... जब उन्हें पदों से अलग किया गया तो उनकी जान टूटने लगी। और उनके जीवन की सारी यात्रा ही बदल गई। कई तो भगवान और देव समाज से कट गए.... और जो रह गए वह कई दिन तक बेचैनी की आग में जलते रहे। लेकिन श्रीमान जी आत्मिक जगत के सूर्य भगवान देवात्मा के गिर्द घूमते रहे और अपने हृदय के मालिक भगवान देवात्मा की रोशनी को पहले से भी अधिक उत्साह के साथ फैलाने में लग गए। इसका फल यह हुआ कि थोड़े ही काल में प्रतिकूल हालात के सब बादल उड़ गए, आकाश साफ हो गया। श्रीमान जी की वफादारी, संग्राम और त्याग के स्वर्गीय फलों के सुन्दर दृश्य साफ नज़र आने लगे।..... ..... भगवान देवात्मा ने उनको केवल सब पदों पर दुबारा नियुक्त नहीं किया किन्तु वह सारी समाज में अकेले ही व्रती कर्मचारी समझे गए।..... यह पूर्णत: सत्य है कि श्रीमान जी का सम्बन्ध सचमुच भगवान देवात्मा के साथ जीवन्त और उन्नतशील सम्बन्ध था।

नोट :- श्रद्धेय श्रीमान जी के आत्म परीक्षण में से जीवन की ऐसी सुन्दर घटनाएं अगले अंकों में देने की कोशिश करेंगे।

- सुरजीत बराड़

तम्बाकू सम्बन्धी भ्रम और भ्रान्तियां

विभिन्न कारणों से लोग तम्बाकू का सेवन करना शुरू करते हैं जैसे कभी स्ट्रेस कम करने के लिए तो कभी गुस्से में, कभी टाइम पास करने और किशोरावस्था वाले अक्सर शौक़-शौक़ में। किन्तु आप अंदाजा नहीं लगा सकते कि आप जिस सहजता से तम्बाकू खा रहे हें उसका परिणाम उतना ही भयंकर होगा। तम्बाकू, खैनी, सिगरेट, बीड़ी, गुटखा जिस भी रूप में लिया जाए, इसके नुकसान निश्चित हैं। तम्बाकू का नशा कोई एक समस्या न होकर कई समस्याओं की जड़ है और यह शारीरिक और मानसिक रूप से नुकसान तो करता ही है, साथ ही मौत को भी जल्दी बुलावा देता है।

तम्बाकू के शरीर पर दुष्प्रभाव:

तम्बाकू का तंत्रिकाओं और मानसिक चेतना पर प्रभाव पड़ता है। इसमें पाए जाने वाला निकोटीन मूड में फेरबदल करने वाला तत्व है। निकोटीन दिमाग में कुछ सैकंड में पहुंच जाता है, जो थोड़ी देर के लिए अधिक सक्रिय महसूस करवाता है। इसका प्रभाव खत्म होने पर लोग थका हुआ महसूस करने लगते हैं और अधिक निकोटीन को लेना शुरू कर देते हैं। इससे निकोटीन की आदत पड़ जाती है और इसी वजह से लोगों की तम्बाकू छोड़ने के तरीके

कठिन लगते हैं। यह स्थिति डिपेंडेंसी कहलाती है। निकोटीन की आदत संज्ञानात्मक चेतना को कम करती जाती है। सायकोलॉजिकल डिपेंडेंसी में चिंतित, बेचैन, उदास असहज महसूस कहते हैं जबकि फिजियोलॉजिकल डिपेंडेंसी में सिरदर्द, नींद न आना, फ्रेश न हो पाना आदि समस्याएं महसूस कहते हैं। यदि ऐसा है तो निश्चित रूप से एडिक्शन के शिकार हो चुके है

श्वसन संबंधी समस्याएं : जब धुएं में सांस लेने पर फेफड़ों को नुकासान पहुंचाने वाले पदार्थ हमारे शरीर में पहुंचने लगते हैं। यह विभिन्न प्रकार की समस्याओं और संक्रमणों जैसे क्रोनिक ब्रॉन्काइटिस ऑक्सट्रक्टिव फेफड़ों की सूजन, फेफड़े में क्रोनिक पल्मोनरी डिज़ीज़ और फेफड़ों का कैंसर आदि पैदा करते हैं। तम्बाकू उत्पादों से निकलने वाला धुआं फेफड़ों को नुकसान पहुंचाकर खांसने, घबराहट, अस्थमा, निमोनिया और ब्रोन्काइटिस की आशंका अधिक हो जाती है।

हृदय रोगों को आमंत्रण : धूम्रपान पूरे हृदय प्रणाली को नुकसान पहुंचाता है। तम्बाकू रक्त वाहिकाओं के सिकुड़ने और चोक होने का कारण बनता है, जो रक्त के प्रवाह को बाधित करता है। रक्त वाहिकाओं को नुकसान पहुंचाने के साथ निकोटीन आर्टरी धमनी रोग का कारण बनता है। धूम्रपान से रक्त वाहिका की दीवारें सिकुड़ती हैं और रक्तचाप और रक्त के थक्कों को भी बढ़ाता है, जिससे स्ट्रोक का खतरा बढ़ता है। यह स्थिति हृदय की बाईपास सर्जरी, दिल का दौरा या पैरालिसिस को आमंत्रण देता है। धूम्रपान का एक्सपोजर भी धूम्रपान करने वाले की तरह जोखिम भरा होता है। सेकेंडरी स्मोकिंग या पेसिव स्मोकिंग सबसे खतरनाक है।

तम्बाकू संबंधी भ्रम और भ्रांतियां : तम्बाकू की लत के कारण ऐसी बहुत सी आम धारणाएं मौजूद हैं जो फिर से इसका इस्तेमाल करने के लिए उकसाती हैं। जैसे -

- मैं तम्बाकू सेवन तो करता हूं परन्तु मैं साथ में पौष्टिक आहार भी लेता हूं इसलिए मुझे कैंसर नहीं हो सकता।
- मैं तो कभी-कभी इसका सेवन करता हूं। कैंसर तो उन्हें होता है जो प्रतिदिन इसका उपयोग करते हैं।
- तम्बाकू छोड़ने के बाद मैं बीमार और सुस्त महसूस करता हूं या करती हूं।
- मेरे बाप-दादा भी तो कब से इसका सेवन कर रहे हैं अगर उनको कुछ नहीं हुआ तो मुझे भी कुछ नहीं होगा।

चौंकाने वाली रिपोर्ट : 'ग्लोबल एडल्ट टोबैको सर्वे ऑफ इंडिया के अनुसार घरों में सबसे अधिक 52 प्रतिशत युवा दूसरों द्वारा छोड़े गए धुएं का शिकार होते हैं। जिसे हम सेकेंडरी या पेसिव स्मोकिंग कहते हैं। शोधकर्ताओं को ये भी पता चला है कि जिन घरों में बच्चों की मौजूदगी में धूम्रपान होता है उन बच्चों में कान में संक्रमण, अस्थमा, निमोनिया, सीने में घबराहट, त्वचा संबंधी रोग पाए जाते हैं। साथ ही बार-बार खांसी, गले में खराश, टॉन्सिलाइटिस आदि रोगों से ये बच्चे अधिक ग्रस्त होते हैं।

- ये बच्चे दूसरे बच्चों की तुलना में कमजोर और ज्यादा बीमार रहते है।
- उनके वजन में कमी पाई जाती है और उनका शारीरिक और मानसिक विकास भी प्रभावित होता है।
- यदि किसी गर्भवती महिला के पास धूम्रपान किया जाता है तो कोख में पल रहे बच्चे को भी कई प्रकार की समस्याएं हो सकती हैं।
- जन्म के समय बच्चे का कम वजन।
- समय से पहले बच्चे का जन्म।
- कुछ मामलों में शिशु की मृत्यु भी हो सकती है।

कुछ छुटकारा पाएं तम्बाकू की लत से: तम्बाकू की लत से छुटकारा पाने के लिए कई उपाय हो सकते हैं जिसमें से पहला यह है कि जो लोग तम्बाकू का सेवन करते हो उनके समूह से दूर रहें। अपने पास में तम्बाकू न रखें।

- जब भी तम्बाकू की याद आए खजूर, मिश्री, इलायची, बादाम के छोटे-छोटे टुकड़े अपने पास रखें और इन्हें लंबे समय तक मुंह में घुमाते रहें।
- जब भी तम्बाकू खाने की इच्छा हो तो एक गिलास ठंडा पानी पिएं। यदि इन प्रयासों से ठीक नहीं हो पा रहे हें तो अपने पास स्थित नशा मुक्ति निवारण केंद्र

या पुनर्वास केन्द्र से संपर्क करें। जहां 7 से 21 दिन के कोर्स होते हैं जिसमें वह दवाओं की मदद, मनोवैज्ञानिक परामर्श और मार्गदर्शन, योग, प्रार्थना, ध्यान आदि के द्वारा नशे की लत को छुड़वाते हैं।

परिवार के लिए CAGE फैमिली थैरेपी :

C : Care and Cutdown : परिवार की सही देखभाल करें, साथ ही उन्हें - प्रेरित करें जिससे व्यक्ति को तम्बाकू छोड़ने में मदद मिल सके।

A : Alert and Avoid annoyances : ध्यान रखें कि तम्बाकू या उससे बना कोई उत्पाद घर में उनकी पहुंच में न आए।

G : Greet and Guard : स्मोकिंग करने वाले व्यक्ति को इस बात का अहसास दिलाएं कि कैसे यह घर में मौजूद बच्चों के स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक हे।

E : Eye opening and Alternatives : जब भी कभी स्मोकिंग करने की इच्छा हो तो सौंफ या बादाम के टुकड़े खाने के लिए दिए जा सकते हैं।

रिप्लेसमेंट थैरेपी में मददगार आहार :

दूध : दूध धूम्रपान की इच्छा को रोकता है और जो लोग दूध पसंद नहीं करते वे अन्य डेयरी प्रोडेक्ट दही, पनीर भी ले सकते हैं।

स्नैक्स : आलू चिप्स और नमकीन अखरोट भी ले सकते हैं। यह धूम्रपान की इच्छा को रोकने में भी मदद करता है। हालांकि उच्च रक्तचाप की समस्याओं से पीड़ित लोग इससे बच सकते हैं।

सब्जियां : गाजर, खीरे और बैंगन जैसी कुछ सब्जियां। विटामिन सी युक्त फल जैसे स्ट्रॉबेरी, मौसंबी, नींबू और नारंगी भी छोड़ने में मदद कर सकते हैं।

पुरोहिताई (प्रीसटहुड) क्या है?

भगवान् देवात्मा ने 14 जनवरी 1919 ई० को कर्मचारियों और सेवक सेवकाओं को अपने श्री चरणों में बुलाकर चार निहायत कल्याणकारी और शक्तिशाली उपदेश प्रदान किए।

(1) पुरोहिताई (प्रीसटहुड) क्या है? और वह धर्म को लेकर नाना देशों में कैसे पैदा हुई और वह कैसे कैसे महा भयानक फल पैदा कर रही है?

(2) देवसमाज के भीतर यह भयानक रोग के घुसने की सम्भावना और उसके दूर करने के कार्यगत उपाय।

(3) देवसमाज के प्रत्येक कर्मचारी और उप कर्मचारी के भीतर अन्य सेवकों के सम्बन्ध में किस किस प्रकार की योग्यताओं के पैदा होने की जरूरत है?

(4) देवात्मा में सत्य और हित के सर्वांग अनुराग और असत्य और अहित के सम्बन्ध में अर्थात् उनकी यह देव शक्तियां क्या हैं, और उनका क्या कार्य है, कि जिन के विचार से उनका आविर्भाव मनुष्य में एक अद्वितीय आविर्भाव है।

पुरोहताई के विषय में पूजनीय भगवान ने फरमाया कि यह पुरोहिताई किसी भी समाज के लिए बहुत भयानक चीज है, इसलिए वह इसे देवसमाज के अन्दर कदापि घुसने नहीं देगें। इस बुराई के प्रति वह,

(1) देवसमाज का काम करने वालों में घृणा उत्पन्न करके उन्हें उससे चौकस रखेंगे,

(2) साधारण सेवकों में उसकी बुराई का प्रचार करके और उनके भीतर भी उसका बोध पैदा करके, और

(3) समाज की गठन में ऐसे नियम रखकर कि जो इस बुराई की जड़ काटने वाले हों, आदि।

ऐसे सब आवश्यक उपाय ग्रहण करेंगे, कि जिनसे यह सांघातिक प्लेग देवसमाज में न घुस सके और

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2018-2020
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

न बढ़ सके।

फिर देवसमाज के कर्मचारियों और उपकर्मचारियों में किस किस प्रकार की योग्यताओं के उत्पन्न होने की आवश्यकता है उसके विषय में जो बहुत सी ज़रूरी बातें पूजनीय भगवान ने ब्यान कीं, उनमें से कुछ यह है :-

(1) वह धर्म प्रचार के प्रोग्राम के साथ-साथ अपने जीवन की नियमित प्रणाली अपने सामने रखते हों, और उसके अनुसार एक व दूसरी निम्न शक्ति के अनुचित अधिकार से उद्धार लाभ करने और एक व दूसरे उच्च भाव को उत्पन्न करने और उन्नत करने के लिए अपने जीवनदाता सत्य देव के देवरूप तक पहुँचने और उनके देव प्रभावों को लाभ करने की कुछ न कुछ योग्यता रखते हों, और उन प्रभावों को जहाँ तक सम्भव हो, अपनी योग्यता के अनुसार प्रतिदिन लाभ करने की चेष्टा करते हों।

(2) वह अपने क्षेत्र के सेवकों और सेविकाओं को अपने साथ जोड़कर उनका और अपना आत्मिक नाश करने के स्थान में जीवनदाता सत्य देव के देवरूप के साथ जोड़ने और उनके साथ उनका आत्मिक सम्बन्ध पैदा करने और बढ़ाने वाले श्रद्धा, आकर्षण और कृतज्ञता आदि उच्च भावों में से किसी एक व कई के उत्पन्न व उन्नत करने की न्यूनाधिक योग्यता रखते हों।

(3) वह अपने आत्मा को अपने जीवन दाता के देवरूप का आश्रित और उनके देवप्रभावों का सदा भिखारी और अपने मंडल व क्षेत्र के सेवकों व सेविकाओं का केवल आत्मिक सेवाकारी भृत्य अनुभव करते हों, और वहां के सेवकों और सेवकाओं के दुख सुख ओर उनकी एक व दूसरी विपद व उलझन में उनके लिए हमदर्दी का भाव रखते हों और न केवल उनमें से किसी को किन्तु उनके भिन्न किसी मनुष्य को कभी और किसी सूरत में घृणा न करते हों और किसी के सम्बन्ध में द्वेष व ईर्षा का भाव न रखते हों और उनके साथ अपनी तरफ से अपने दिल में सदा सद्भाव रखते हों और उन से फट न जाते हों, और उन्हें अपनी व अपने पारिवारिक जनों की एक व दूसरे प्रकार की वासनाओं की तृप्ति की सामग्री न समझते हों और न बनाते हों।

(4) वह अपने मंडल व क्षेत्र के सेवकों व सेविकाओं की किसी क्रिया से -यहां तक कि उनकी किसी अनुचित क्रिया से भी-उनके दुश्मन न बन जाते हों, इत्यादि इत्यादि।

(भगवान देवात्मा के विशेष लेख और उपदेश, तीसरा भाग)

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts